वाला खेमाराम को, परमवीर चक्र पानेवाले धान सिंह थापा को आउर सिख रेजिमेंट का सुबेदार जोगिन्दर सिंघ को।

ई सब न है जे मतारी का दूध सरियत दिया। अकेले पाँच-पाँच सौ चीनी के उलाट घाला। दुस्मन के फौज का बदरी में ई सब जवान बिजुरी माफिक चमकती है, इनको बहादुरी के घोंड़ा का टाप असमान के तरेगन पर बाजती है। ई सब न जवान है जे भारथ माई को असली सिंगार है, सिंगार गहना नहीं है, सोना नहीं हैं; रोपेया नहीं है देस का आजादी है। देस को आजादी के सिंगार करने आउर सरबस तैयाग करने को घरी आ गई है। देखना है के केतना सोना आउर रोपेया देता है। गाँव के मेहरारू लोग चुप काहे है? मरद लोग दोसरा का मुंह काहे तिकती है। खदेरन को माई परात लेके मेहरारू लोग का पास आउर बुलाकी तुम मदर लोग का नगीच जाओ। फाटक जी आप लिस्ट तैयार कीजिये। खदेरन को माई, रूकती काहे है। ईमतहान को घरी आ गई है बुलाकी आगे बढो। कहने का नहीं करके देखाने का टैन आ गई है।

खदेरन की माँ : (गले से हँसुली निकालती हुई) रहीं जी, रुकत नइखीं। गहना निकालत बानी। सोना के हंसुली हाली निकलते नइखे। लीं पाँच थान सोना पतोह के देबे खातिर रखले रहीं। देस के इज्जत बांची त पचास थान बन जाई। जब देस के कामे ना आई

त ई बहरका सोना फोंकारे के रही ! आ मार बढनी रे।

लोहासिंह : (रूँआंसा) खदेरन को माई, आज हमको तुम्हारी ऊपर ऊ मोहब्बत आया है जे बियाह के दिन भी नहीं आई थी। फाटक जी हमारा भी पूरा पिलसिन लिखिये। जब तक चीनी भाग न जाय तब तक।

पाठक : लिखलीं जजमान। (पाठक जी लिखते जाते हैं।)

लोहासिंह : एक सांझ खाएगा घास के रोटी खा के रहेगा बाकी दुस्मन का हुलिया टैट कर घालेगा।

खदेरन की माँ : ओकर फिकिर हमरा पर छोड़ीं। आ मार बढनी रे, हाथ गोड़ चलाके चाहीं त सउंसे गाँव के खिया दिहीं।

पाठक : हम अपने लिखली डेढ़ सौ जजमान। दछिना के रोपेया जेबा से आगे भी देत रहब।

बुलाकी : हमरो लिखीं पचहत्तर गो। एह साल कम्मल राजाई न कीनब, पुआरे पर सूतब। उहे कम्मल लद्दाख जाई।

पाठक : लिखलीं, बुलाकी जजमान।

खदेरन की माँ : खालिक की बीबी को समझाती है।) तू सब मत द बहिनी। तोहरा आउर कौनो सहारा नइखे।

लोहासिंह : किसको रोकती है खदेरन को माई ?

खदेरन की मां : खालिक भैया के मुसमात हई। इनका न खेत बा न संवाग बा। इहे तीन चार थान सोने पर जिंदगी काटे के बहरल।

लोहासिंह : हाय ! खालिक हैजा में चला गया। हमारा भाई से बढ़ के था।

खालिक की बीबी : (रूआंसी) लोहा भैया, मोको एही का अफसोस है कि मेरा खसम बीमारी से मरा। जीता तो अपने से लड़ाई के मैदान में भेजती। न बेटा है, न भाई, गहना के अलावा कुछ ना है कि देस के कौनो काम आऊं ? ले लो एको नहीं त मेरे चैन नहीं मिलिहे। हमसे ऊ जन्नत में पूछेंगे तो मुँह छिपाने का मोका आ जईहै। जब मुलुक बचा रहिहे त मेरी परबस्ती की का फिकिर लो। मेरी बात मानो।

लोहासिंह : कहाँ है चीन का झुठ्ठा बैमान परचार करनेवाली जे कहती है नेहरूजी औरत का गहना छीनते हैं, लइका का पइसा छीनते हैं। इहाँ देखो देस का उमंग। (पुरुषों में बुलाकी और स्त्रियों में खदेरन की माँ दान माँगते हैं।)

खदेरन की माँ : पाठक जी लिखीं, रामछबीला के दुलहिन जे काल्हे अइली ह आपन सब सोना के अभरन १४ थान।

पाठक : लिखलीं। बोल बुलाकी सिंघ। बोल जजमानिन।

बुलाकी : महतो जी सात सौ, राउत पचास, सुभान भाई बावन, करती तेरह, हरखू नौ, बिसेसर दस, सोना पनरह, जोखन राय, (इत्यादि कई नाम)।

खदेरन की मां : राकली मौसी तीन थान, राधाबहिन इकसठ थान, दयाल बहू दू थान, बिसेसर बो सतरह थान, भगजोगनी दू थान, फटकाइनजी तीन थान (इत्यादि कई नाम) [परात में गहनों सिक्कों की बरसात, पाठकजी लिखलीं

लिखलीं कहते जाते हैं, लोहासिंह चाबस चाबस, खदेरन की माँ और बुलाकी बारी बारी से नाम कहते हैं। खदेरनकी माँ कुछ नामों में कनफूल, हैकल, नथिया आदि गहनों के नाम का भी उल्लेख करती है।]

पाठक : जजमान, इ त परात में सउंसे गाँव के सोना आ रोपेया जमा हो गइल।

लोहासिंह : जिस देस में ई जोस है उसका सिवाना दुस्मन का होस ठंढ़ा होके रहेगा। बुलाकी सब का मोटरी बनाओ। फाटक जी आर लिस्ट लेके चलिये। हम बूनक का पहरा में इसको सहर ले जायेगा अउर रिजरव बंक का डिफेंस फंड में तुरंत जमा करेगा। रेडी डेफेंस फंड बटैलियन अटेनशन, फारवड मार्च, ले फराठी कूंचमार।

[लोहासिंह के साथ लोगों का प्रस्थान, परदा गिरता है।]

J. P.

अफवाह

खदेरन की माँ : (स्वागत) आमार बढ़नी के जाने कहवाँ गइलन। गाँव के लोग किसिम किसिम के बात कहता जीव छव पाँच में परलवा।

(लोहासिंह लेफराईट करता आता है।)

लोहासिंह : खदेरन को माई, नेफा आउर लद्दाख का फरंट पर जाने खातिर हम अपना डबल तैयारी कनपलीट किया। बनूक साफ करके रैट किया, उर्दी-पेटी आउर बूट-पट्टी फिट किया, उहाँ चहुँप के घड़ाक घड़ाक घड़ाक, चीन का बैलून फोर के उसको चटनी बना घालेगा। तुमहूँ अपना हाइकलौटी के बढ़नी लेके चीनी सभ के मैकमेहन लैन का उस पार बहार फेंकने को रेडी होले। दुइये-तीन दिन में

अपाना हॉल गाँव का भिलेज को हम रिक्रूटिंग आपिस ले जायगा। ओहिजा तुम्हारी बहाली घंघरिया पल्टन का लफटंट में करावेगा आउर भागजोगनी का भर्ती घंघरिया पल्टन का हवल्दार में होखी। हैं बइठल बइठल का सोंचती है ? मिजाज अप, हाली अपाना बढ़नी लेके अटनसन में हो जाओ चंपियन। कवना बदरेसन का फिकिर में पर गई है मेमिन ?

खदेरन की माँ : अजी, का त चिनियन के नाक एकदम चापुट होता ?

लोहासिंह : नेफा आउर लद्दाख का फरंट पर हिन्दुस्तानी सेना का वीर बांकुड़ा जवान लोग, चिनियन का नाकबोल पर अइसा दुमच के फैट मारा कि ऊ सब को नाक का डिब्बा पचक गई।

खदेरन की माँ : आ कात चिनियन के अंगुरी छोट छोट आ रंग एकदम हरदी लेखा पीयर होला ?

लोहासिंह : पीयर नहीं होगा ? चीन का सब जोजना फैलियर हुआ। चीन में अकाल पर गई है। खाने को मिलता नहीं है चेहरा पर लाली कहाँ से आई ? खिसिआइल बिलाई जिस माफिक खम्हा नोचती है उसी माफिक चीन अपाना अकाल आउर कंगाली का लाज छिपावने खातिर हमारा मैकमेहन लैन पर कनकसन करती है। बुरबक निमाना घरे नेवता दिया। भुला गया कि सोनार के सौ चोट आ लोहार के एक चोट बरोबर होखती है। अब बगुला भगत लेखा सिटलमिंट का झूठा बानी बोलती है बाकी

चीन के चल्हांकी का खिलिम बिना फोरले हम लोग नहीं मानेगा ।

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, रउआ से बतिआईला त बुझाला कि चिनियन के चुटकी से जांत के मटर के गादा लेखा ओदार घालों, पलाकी के साग लेखा पहंसुल से कच्च कच्च चीर के कड़ाही में छुउंक दीं बाकि गाँव में ए गइला पर लोग अइसन बतकही सुनावेला कि जीवे सुखा जाला । अजी का त सास्तर में लिखल बा कि कलऊ में नकचपटन के तरंकी होखी ? आमार बढ़नी रे ।

लोहासिंह : (चौंककर) हालट खदेरन को माई, तुम डंडरस कलौटी का पैनिक फैलाने वाला गलत फैमली बानी बोलता है । ऍं, ई नकचपटा सास्तर का कनस्तर कौन बजाया ? हाली जवाब दागो ।

खदेरन की माँ : आ रहीं जो, कवनो हम अपना मने गढ़ के कहत बानी । सउंसे गाँव में गलबल गलबल भइल बा । आ मार बढ़नी रे ।

लोहासिंह : जवाब दो, चिनियां बेगम लेखा चांव चांव नत करो । क्वीक । पाठक जी बोला ? सास्तर के त उहे हेडमास्टर है ।

खदेरन की माँ : चउबाइन ई बात सहुआइन से कहली, सहुआइन ललाइन से कहली, ललाइन हलुआइन से कहली, हलुआइन सिताबी के चिचिआइनसे कहली, सिताबी के चिचिआइन रमकली मउसी से कहली, मउंसी भगजोगनी से कहली, भगजोगनी हमारा से कहलस ।

लोहासिंह : खदेरन को माई, एही के अफवाह बोलता है। जवना देस का पाबलिग अफवाह के चक्कर में पर जाती है ऊ फरंट पर मातृभूमि को रच्छा खातिर खून बहाने वाली जवानन का सब मेहनत माटी कर देती है। अफवाह फैलाने वाला सब मरद टेलीफूंक है और अफ़वाह फैलानेवाली सब मेहरारू फेनूगिलास है। जिस माफिक एगो पापी समूचा नाँव डूबा घालती है उसी माफिक अफवाह डबल बलन्डर मिरटेक करती है अफवाह का जड़ में दुस्मन का जसूस रहती है। हम फौरन से पेस्तर इसको इनकौरी करेगा। बोलो, चउबाइन से ई बात के बोला।

खदेरन की माँ : ई त हम नइखीं जानत।

लोहासिंह : तब विसवास काहें किया ? केहू कह देगा कि कउआ कान ले के भाग गई त अपना कान नहीं टोएगी, कउआ-हँकनी लेखा तुम कउआ के लखेदले फिरेगी ? (स्वगत) जरूर ई कौनो चीनी चार सौ बीस का कारस्तानी है उहे तुमलोग के अक्लिल के सीता के रवना का माफिक हरन कर लिया है।

खदेरन की माँ : खाली इहे ना नु जो, बढ़नी मारो के किसिम किसिम के बात फैलल बा। केहू कहता अब हवाई दहाज से बम गिरी, केहू कहता सउंसे कलकत्ता खाली हो गइल, ओहिजा से भाग के लोग पटना चल आइल, केहू कहता चिनियन के खाली जउआं लइका होता एही से ऊ सब के तदाद हमनी के देस से दोबरी तेबरी बा, केहू कहता सहर के सब रसपतालन में घवाहिल जवान लोग भरल बा।

लोहासिंह : हालट ! खदेरन को माई, अपना नरेटी के पुलिस्टांप आउर अपाना जीभ को अटनसन बोलो। मलेटरी कानून हमारी से बढ़ के केहू नहीं जानता है। ई सब बिना गोड़ मूड़ी का देहाती बैकुफाना वाला बतकही है। मलटरी का जवान पबलिक के अस्पताल में कबो नहीं रहती है मलेटरी का इसपेसल कलौटी का अलगे अस्पताल होता है। ई बात मैमिन का गजट में लिखा हुआ है जिस माफिक लुगा में लुत्ती लाग जाने पर उसको तुरन्त मीसके बुता देना चाहीं उसी म फिक अफवाह के तुरन्त बिरके मार के हुलिया टैट करना चाहीं।

खदेरन की माँ : त भगजोगिनीये न लहक लहक के सुनावत चलत बिया। बुझाता कि मोहर लूटत होखे। आमार बढ़नी रे, मारी लुबनी हिया।

लोहासिंह : (क्रोध से) बोलाओ भगजोगनी के। तुरंत। अबहीं हम उसको इनकौरी करके दुस्मन के जसूस के कोट-मारसल करेगा।

खदेरन की माँ : हउ का पानी भर के आइल (पुकार कर) भगजोगनी, चल हेने आव। पुजालू आज। मना करत रहीं त मनते ना रहे। आ मार बढ़नी रे।

भगजोगनी : (नेपथ्य से) काह मालकाइन। अइलीं। (भगजोगनी आती है)

लोहासिंह : (डपटकर) हाल्ट। काहे रे भगजोगनी, तुम चिरागे चीन का साथ कनकसन करके भुकभुकावती काहे है ? अतह मार मारूंगा कि पराने मू जाई। आ मू जइबू त हम का करब ?

खदेरन की माँ : बोल, जो भोरहीं से आयं बायं बोलत रहिस ऊ के एह गाँव में सुरुम कइल ? बताव हाली ?

लोहासिंह : (जोर से डाँटकर) बोल नाहीं त हमारी चमचमाती हुई बनूक गरजन करके हरमेसा खातिर तुम्हारी बोलती बन्न कर देगी।

भगजोगनी : बोलत बानी, तुरंत बोलत बानी। मलिकार ई हल्ला अपने गाँव में नइखे, अगल बगल के सातों गाँव, सउंसे जवार में बा। हम त गवल के गितिया मलकाइन से गावत रहीं। रउआ जे घिरजा आउर जोस लोग में भरले रहीं मलिकार ओकरा ठीक उल्टा हवा आज भोरहीं से बहता। सबके हिम्मत पस्त हो गइल बा।

लोहासिंह : जे उल्टा हाई दहाज चलाया उस चिरागे चीन के हम उल्टा लटका के ढिबरी फोर घालेगा। अफवाह फैला के पाबलिग का मिजाज के सिगल डौन करने वाला देसदरोही लम्मर वन है। हम उसको बिना सजाय देले नहीं छोड़ेगा।

खदेरन की माँ : त नउआँ बताव। तेहीं न कहत रहिस कि हम आँखें देखले बानी। आमार बढ़नी रे। बोल।

भगजोगनी : मलिकार एगो साधू लेखा भूल पेन्हले इमदी भोरे मसानघाट पर लउकल रहे। कहत रहे कि हम अगम-जानी हईं। उहे ई सब बात फैलावत रहे आ कहत रहे कि लोहासिंघ के बहकवला में नत पर जा।

लोहासिंह : बूझ गई। जरूर ऊ दुस्मन का इमदी है। अबहीं कहाँ है ?

भगजोगनी : अब मसान घाट पर नइखे। पानी भरे गइल रहीं त इनार पर दूगो गोबर बिननी कहत रही सन कि बड़का पूल देने लउकल ह।

लोहासिंह : (तैयार जाता हुआ) बहुत डंडरस कलौटी का बात है। दुस्मन का जसूस पुल देखने जाती है। उसको हम तुरन्त चैलेंजर करेगा। खदेरन को माई, बुलाकी को बोलो, तुरन्त बिगुल बजा के गांव भर के जमा करेगा। हम घोड़ा पर जाता है। सब केहू बड़का पुल के चारों देने से घेर लो। भागने न पावे।

(लोहासिंह तेजी से जाता है। बिगुल की आवाज)

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे, हमार बढ़निया कहाँ बा, चलहाक दुस्मन राम के बोखार उतारीं।

भगजोगनी : इका बा मलकाइन, लिहीं। सउंसे गाँव तैयार हो गइल। दउड़े के। मलिकारत घोड़ा पर आन्ही लेखा होह गइलन।

(खदेरन की माँ और भगजोगनी का प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

(एक पुल के पास लोहासिंह साधु वेश में एक चीनी को पकड़ता है।)

लोहासिंह : खबरदार, हैंड्स अप ! भागने का कोसिस नत करो चिरागे चीन, नाहीं त तुम्हारी बत्ती हरमेसा खातिर बुता जाई।

जासूस : बच्चा। राजी खुसी, राजी खुसी। अम तो साद्धू भगत। बन्दूक हटा के तुम आँक मूदेगा। अम तुमको असीरवाद करेगा बच्चा।

लोहासिंह : ढेर बचा बचा कहेगी तो हम तुमको कचा चबा जायगा। बादमास आँख बन्न करके लोटा गायब करने का फेर में है। मलेटरी का इमदी से टिरिक बाजी नहीं चलेगा। तुम पुल का फोटो काहे घींचती थी रे ?

जासूस : अम ? फोटो ? कइसा फोटो ? नईं नईं । हम फोटो नईं ।

लोहासिंह : हम सब देख लिया है। पैनिक फैलानेवाली चीन का दलाल, अफवाह का अफीम । साधू का भेख बना के सतेयानास का सरौता चलाती है ? अपना झोरा झक्कड़ अलगे रखो । भागने को कोरसिस बेकार है। हमारा पूरा गाँव पुल को घेर लिया है। देखो खदेरन का माई भगजोगनी का साथ बढनी ले के चहुंप गई ।

(खदेरन की माँ के साथ भगजोगनी और गाँव के बहुत से लोग पहुंच जाते हैं)

खदेरन की माँ : (चीखकर) अजी आँख में धूर झोंक के भागल जी।

लोहासिंह : खबरदार। (जासूस चीखता है।)

भागजोगनी : मलिकार छउक के उनका के पटक देलन कि।

(लोहासिंह चीनी जासूस को छाती पर सवार हो जाता है।)

लोहासिंह : बादमास बनका गिद्दर जाएगा किद्धर ? (पीटता जाता है) आउर भागेगा। आउर फोटो खींचेगा ? खदेरन को माई हम इसको दूनो हाथ धइले हैं तुम इसका झोरा निकालो। उसमें खतरनाकुस चीझ होने सकती है। चाबस। बोल चाउं मांउ।

जासूस : (रोकर) लू शू फिन चु शिन चाउं माउं। हि हि ही।

खदेरन की माँ : मन त करता कि मार बढनी मार बढनी बहरकू के चाम छोड़ा दीं ।

लोहासिंह : बुलाकी, इसको रस्सी के बान्हे । हम जानता हैं कि खदेरन को माई उसको बढनी फिकेसन करने खातिर आउर बुलाकी इसको कम्मल परेड कर करावने खातिर बेआकुल है। सब केहू के चानस मिलेगा। सब केहू इसको बेलमुंह पर अंधा थोपी खेलियेगा। बाकि एक बात गाँव के सब केहू मरदे मेहरारु सुन लीजिये। देखिये इसको झोरी में फोटो घींचने का अंजन है आउर सब हरवा हथियार है। लड़ाई के टैन में कौनो अनजान इमदी पर बिसवास नत कीजिये । जहाँ कोंनो कनक्सनवाला इमदी देखिये फौरन पुलिस के हवाले कीजिये। कबहूँ आफवाह नत फैलने दीजिये। आउर जे अफवाह फैला के पेनिक करे उसको मार ताबड़ाक उहैं सिटलमिंट कर दीजिये। हमलोग चीन के चाल्हांकी का चिलिम फोर के रहेगा । हमारा जीत निश्चे होखी। मिजाज अप। चलो बुलाकी अब बनूक का पहरा में दुस्मन का जसूस के थाना ले चलेगा। रेडी, दुस्मन के जसूस के हुलिया टैट करके अफवाह के फुलिस्टौप करनेवालो बटेलियन। अटेनशन। आफवार्ड मार्च। लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट, लेफ्ट राइट।

(चीनी जासूस को बान्ध कर लोहासिंह ले जाता है। पर्दा गिरता है।)

रमेश्वर पाठक
ग्रा. [illegible]

उत्पादन वृद्धि

[दोपहर में लोहासिंह के परिवार के लोग सो रहे हैं। लोहासिंह बाहर से आता है।]

(बुलाकी तथा कई लोगों की नाक बज रही है)

लोहासिंह : हई देख। एने बुलाकी, फाटक बाबा, आउर धान के खेत में कटनी करनेवाला एक दर्जन बनिहार दुपहरिये में सूत के अउंघी का छाल्ही काटता है। ओने खदेरन को माई, भगजोगनी आउर सब धन कटनी करनेवाली सपनलोक का फरंट पर मारकटेन करती है ?

जागो खदेरन को माई, जागो बुलाकी, जागिये फाटक बाबा, नैन का डिब्बा खोलिये।

खदेरन की माँ : (नींद में) आ मार बढ़नी रे, केह ? के जगावता ?

पाठक जी : (नींद में) जेबा से केह भाई ?

बुलाकी : (नींद में) हाला नत कर भाई, अबहियें अउंघी परल बा। भर नींद सूत लेबे द।

लोहासिंह : (स्वगत) अबहीं हम सहर से लवटता था त देखा जे सगरो खेत में काम बन्न है, जोलाहा लोग के करघा का फटाफट मसीन फुलिस्टौप है, तबे हमारा दुनो कान स्टेंडप औन दि बिरिंच हो गया। बूझ गई, बूझ गई चीन जे अपाना चल्हांकी से सीज फैर करके गोली चलाना बन्न किया उसी को ओजह से ई लोग के गलत फैमली हो गई। बाकि हम सूतने नहीं देगा। जब ले देह का डिस्टिक में परान का सिपाही पहरा देता है। हम चैन नहीं लेगा, जगाता चलेगा, असलियत का रस्ता देखाता चलेगा। जागो, तुम लोग के हम नहीं, देस पुकारता है, नेफा आउर लद्दाख के मोर्चा पुकारता है, घवाहिल हिमाले पुकारता है, बेचैन मैक मेहन लैन पुकारता है, ओह बहादुर जवानन का रकत पुकारता है जे देस का इज्जत पर कुर्बान हो गई। जागो, जागो।

पाठक जी : जाग जा हो, जेबा से भुकम्प आ गइल।

खदेरन की माँ : जागजा, आन्हीं आ गइल ?

बुलाकी : हमार बिगुल के बजावल ?

(शोरगुल, जागजा, आन्हीं आइल, तूफान आइल, काह ? काह ? बड़ा नीमन नींद लागल रहे, ओह जीव डेरा गइल, ई त लोहासिंघ हवन)

बिगुल काहे बाजल ? कौन आफत आइल ?

खदेरन की माँ : आ मार बढ़नी रे जीव डेरा गइल ह, अइसे आदमी चिकरेला ?

पाटक जी : हम त तोहरे के खोजे आइल रहीं जजमान । जेबा से सबके सूतल देखलीं त सूत गइलीं । आलस बड़ा छुतिहर चीझ है ।

बुलाकी : एकरा में आलस के कवन बात बा ? फाटक बाबा पाहुन के देखते लगलन रंग बदले । भोरहीं से कटनी कइलीं जा बोझा ढोव्लीं जा अब खाके इमदी चार घटा सूतो ना ?

खदेरन की माँ : हमनियों के बिहाने से धमाधम ढेंकी में चूरा कूटत रहीं जा। आ अब त सगरो हल्ला बा कि लड़ाई बन्न हो गईल। कतहूँ गोली नइखे चलत। आ मार बढनी रे, ई न अपने चैन से रहस न केहू के रहे देस ।

बुलाकी : लड़ाई ना ठंढाइत त हमरा के भर्ती आपिस में ओह दिन बहाल ना करित। हम का केहू से कम रहीं ?

पाटक जी : तोहरा के त बुलाक सिंघ जमदार साहेब इ कह के छटलन कि नापे जोख में घट गइल जेबा से। गांजा पी पी के करेजा सुखवा घलले बाड़ ।

बुलाकी : ना चुप रहअ। कहलन कि कुछ दिन भइंस का दूध पीयो। जरूरत होखी त बोलावेगा। फाटको जी हमरे के उल्हा करे के फेर में रहलन। अपनहीं कहत रहन कि एहिजे से जजमान के गरजन सुन के चीन के सेना सिवाना पर से भागे लागल ।

खदेरन की माँ : ई बतिया त हइए ह। का त चाऊं माऊं भारथ के सेना के तैयारी देख के मारे हदस के रोए लागल आ कान धर के तीन हाली उठकी बइठकी कइलस आ सोलह के चीठी लिखलस कि अइसन गलती अब फेन ना करब। बहरका चीन अब उधिआइल। अब कौन फिकिर बा? लड़ाई त लड़ाई, सुखो चैन के दिन में ई इमदिन के चंग पर चढ़वले रहलन।

(सभी चिढ़कर कोलाहल करते हैं) "लड़ाई बन्न हो गइल। अखबार में पढ लीं हं। फिरंगी कहत रहन। हमरा पूरा मालूम बा अब केनहू गोली नइखे चलत। सोलह हो गइल चीन भाग गइल। सिवान से अलगे चल गइल।"

लोहासिंह : हालट, नरेटी को अटनसन बोलो। फुलिस्टौप। अरे तुम सब इमर्दी है कि सोडावाटर का गैस है? एक हाली सोना दे दिया, कुछ चन्दा दे दिया ओकरा बाद निहचिंत हो गया? तुम लोग त भारी देस दरोहा का कारज करती है? जिस टैन देस का परडकसन बढाना चाहीं, खेत में खरिहान में, कारखाना में, फिटकिरी में सगरो खूब अनाज आउर कम्मल आउर सब किसिम का असबाब तैयार करना चाहीं त तुम सब महटियाता है? एँ? परडकसन में कमी इजकोल टु देश का साथ धोखा, उतपादन में कमी इजकौल टु दुस्मन का साथ कनकसन। तुम लोग जवना कारज खातिर अपना भाई, बेटा, भतीजा के फ्रंट पर भेजा। नेफा आउर लद्दाख के

मोर्चा पर जे जवान चौकसी के साथ दुस्मनके गिर-गिट का माफिक रंग बदलना देखता है आउर देस के सिवाना गारड करता है उसी के खातिर तुमको अधिका से अधिका मेहनत करना है, हर गली, हर गाँव, हर खेत, हर खरिहान, हर कारखाना के नेफा आउर लद्दाख के मोर्चा बूझो, वर फुटिंग पर जे जहाँ है उहें डटके काम करो। आराम हराम है।

खदेरन की माँ : अजी तका सोलह नइखे भइल ? चीन के सेना पर राम जी बज्जर गिरास, काली माई बढनी फेरस, हलुमान सभी चीन के सेना के मूड़ी में लुकारी बान्हस। हम त सुनलीं कि लड़ाई सानत हो गईल। आ मार बढनी रे।

पाठक जी : जजमान हमहूँ सुनलीं कि चीन के सेना हमनी के सेना के कनक भूधराकार सरीया देख के सियार लेखा जेबा से पोंछ दबा के भाग चलल। अब त जेबा से खाली हरदी गुरदी बाकी बा।

बुलाकी : अरे महराज, जसहां चाऊं माऊं सुनलस बाबू बुलाकी सिंघ नेफा के फरंट पर आ रहल बाड़न, चाऊं माऊ फट्ट दे अंगुठा के निशान दे के चिट्ठी लिखलस कि भर पवलीं दादा, बकस हो बिलार मुर्गा बांड होके रहिहें। मरतीं छपाक से तरुआर चीन के सेना के गुरिया गुरिया उड़ जाइत। ना पाहुन। लड़ाई बन हो गइल कि ?

(कोलाहल हंसी)

लोहासिंह : (क्रोधसे) चौप देहाती बेकुफाना के बात बन्न करो। बाहजी बाबू बुलाकी सिंह। कुकुर काटल बन्न

करके भूंकना सुरुम किया है बकि इसको कवन गरंटी है कि ऊ कब भूंकना बन्न करके काटना इस्टाट करेगी ? दुस्मन अबहीं हमारा सिवाना में है। गोली बन्न है बाकी टेबुल पर कागद के तोप का लड़ाई जारी है। चाऊ माऊ का चिट्ठा धोखा के टट्टी है। चीन जब अपाना सेना के कमजोरी देखा त अल्चारी लड़ाई बन्न किया। चीन जब देखा कि सउंसे दुनिया उसको चिलिमची समुझ के थूकता है त लड़ाई बन्न करके कपट का चाल चलती है। चीन बिलाई भगत का माफिक सतर चूहा खाके हज करने का नकल करता है। खबरदार, चीन का चल्हाकी में नत परिये। चीन झूठ का झंडेल है, बेमानी का बोतल है, चल्हांकी का चिलिम है अउर परपंच का पाव रोटी है। तैयारी में कमी नत ले आइये, परडकसन बढ़ाइये, चीन का दांत खट्टा करने खातिर तैयार रहिये।

[सभी—कोलाहल करते हैं ई त बात अजब बात बा। हमनी के भारी धोखा में रहीं जा, हमनी के समुझत रहीं कि लडाई खतम हो गइल। चीन मतलब से लड़ाई बन्न कइले बा।]

बुलाकी : पाहुन चीन के चिट्ठी के बात झूठ ह? बताव हाली हमरा खीस बरल आत बा।

खदेरन की माँ : ऊ बहरका सोलह के बात कइले बा न जी? आ मार बढ़नी रे चीन त एकदम मुख में राम बगल में छुरी वाला खिस्सा कइलस।

पाठक : जजमान जेयामे तनी फरिया के कह कि झूठ के

अवतार जे चीन के सरकार बा ऊ का उचारता बा ?

लोहासिंह : सुनियेगा त मारे खीस के आपलोग के बेलुमंड गरम हो जाई। चीन के गौरमिंट जब अपना देस के जनता के धोखा देती है तब पड़ोसी देस के धोखा देने में उसका कवन लाज ?

खदेरन की माँ : चीन आ लाज। लाज के त बहराँका घोर के पी गइल बाड़सन। आ मार बढ़नी रे।

लोहासिंह : चाऊ माऊ तीन पैंट वाला चिट्ठी लिखी है। ऊ सोलह का नहीं हिनुस्तान से हार मानवाने का चिट्ठी है। उसको तीनों पैंट खराब है। बेमान कहता है कि भारत लद्दाख के चौदह हज़ार बरग मील जमीन चीन के दे देव। का ई मानने को बात है ?

(सभी—क्रोधपूर्ण कोलाहल, नहीं, नहीं, नहीं, कभी ना। हरगिस ना।)

लोहासिंह : दोसरा पैंट में चीन कहता है कि नेफा आउर लद्दाख के बीच वाला हिस्सा में जहाँ तक हम बढ़ गई हूँ ओहिजे से नहीं हटूँगी। मानियेगा ?

(सभी कोलाहल—कभी ना, भगा के दम लेब)

लोहासिंह : तेसरा पैंट खुलासा करती हुई है कि चीन जिसको मैकमेहन लैन कहता है उहे हिंदुस्तान मान ले। अरे बुरबक, हम जिसको मैकमेहन लैन मानता है इसका गोवाही इतिहास देता है, कागद देता है, हमारा सिवान सबसे ऊंचा

पहाड़ है आ तुम अफीम का झोंक में आज इसको मैकमेहन लैन कहती है, काल्ह उसको, परसो उसको। चीन का मैकमेहन लैन छनभंगुर है कुकुर के पोंछ का माफिक डोलती है आउर मेमिन का निगाह का माफिक एक जगह अस्थिर नहीं है। कहिये उसको मैकमेहन लैन केहू मान सकता है?

(सभी—कभी ना, त्रिकाल में ना।)

लोहासिंह : पुरुब आउर उत्तर में जेतना दर्रा है उस पर चीन अपना कबजा मांगती है। भारत कबहीं इस धोखा में नहीं परेगा। कबहीं चीन का टिरिकबाजी नहीं चलेगा। तैयार रहिये, तैयार रहिये, अपना देस का एक एक इंच जमीन खातिर लोहा से लोहा बजाने को तैयार रहिये।

(सभी— तैयार हैं, तैयार हैं।)

लोहासिंह : ई तबे होगा जब सहर देहात सगरो खूब काम होगा। खेत में अधिका अनाज पैदा होगा, खदान से अधिक बरुद निकलेगा, करखाना से अधिका रैफल का गोली बनेगा। किरिया खाइये कि चौगुना काम करेगा; जेतना अनाज पैदा करते हैं उससे चौगुना पैदा करेंगे। मेहनत के छिपाइये नत, हर घड़ी भारथ माई के इयाद रखिये। भारत माता की जै। सूते के कवनो काम नइखे।

बुलाकी : बाकि पाहुन, हमनी के कवनो सहर के ओकिल मोखतियार हई कि कचहरी में दू घंटा अधिका खटीं?

खदेरन की माँ : देहात में त इमदी भोरे से सांझ तक खेत में जूझते बा।

पाठक : हँ जजमान ई बात तबा जेबा से ? गांव में त सुरज उगला मे सुरज डुबला तक काम चालू रहते बा।

लोहासिंह : काम जब पइसा खातिर नहीं देस खातिर होगा, देस परमे के नांव पर होगा त हंसुवा दस का जगहा बीस बोझा धान काटेगा, दोबरी खेत जोताई, करघा में अधिका दरी आउर कम्बल बनेगा। कारखाना में अधिका सामान बनेगा। देस भर में जब सामने रहेगा त काम के टैन में बात नहीं होगा, दुपहरिया में अउंघी नहीं लागेगी। इयाद रखिये इमदी खातिर कुछुओ असंभव नहीं है। आदमी चाहे त चीन के भगाना कौन चीझ है सरग के धरती पर उतार दे।

खदेरन की माँ : चल जा, हाली खेत पर जा जा, काल्ह से दुपहरिया के खाए के खेते पर चहुंप जाई।

बुलाकी : चल हो भाई लोग, धान काटत घरी सोंचल जाई कि ई दुस्मन के नरेटी ह, दरादर उड़ा दिआई।

खदेरन की माँ : हमनियों के धान कुटत घरी बूझल जाई कि दुश्मन के कपार थूरत बानी।

पाठक : चल जजमान, हमनियों के खेत में जुट जाय के।

लोहासिंह : चाबस। खेती का परडकसन बढ़ाने वाली बटैलियन रडी, अटेनशन। फारवर्ड मार्च। लेफ्टराइट, लेफ्टराइट, लेफराइट।

(पर्दा गिरता है)